DR. PRITI RANJAN
Assistant Professor
H. D Jain College Ara

B.A Part - II

Paper - 1

Topic - Magadh ka uday.

पाटलिपुत्र को राजधानी बनाने से आरंभ पर मगध का पूर्ण नियंत्रण हो गया क्योंकि यह पथ गंगा के उत्तर में था और हिमालय की तलहटी तक जाता था। अतः व्यापार-वाणिज्य को बढ़ावा मिला। जलीय मार्गों की उपलब्धता से मगध के दो फायदे हुए - एक तो राज्यों से संपर्क एवं उन्हें जीतने में सफलता मिली दूसरा भारी सामान ले जाने के लिए सुगम यातायात की सुविधा प्राप्त हुई।

सैन्य कुशलता

आर्थिक संपन्नता एवं प्रचुर भौगोलिक संसाधनों ने मगध को सैन्य शक्ति के संगठन एवं विस्तार के लिए उपयुक्त अवसर प्रदान किया। अब सेना में हाथियों का प्रयोग आरंभ हुआ। ये दलदली इलाके के लिए उपयुक्त होते थे तथा दुर्गों को भेदने का काम भी लिया जा सकता था। अन्य समकालीन महाजनपदों के पास गज सेना की कमी थी। मगध को एक अन्य लाभ भी लोहे के खानों के रूप में प्राप्त था। इस लोहे का उपयोग हथियारों के रूप में किया गया। इस प्रकार लौह हथियारों हाथियों एवं जलसेना की बहुलता ने मगध को अन्य महाजनपदों से अलग एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया और उसे साम्राज्य के रूप में ढलने में सहायता की।

मगध का स्वतंत्र सामाजिक वातावरण

अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक स्वतंत्र था। चूँकि शास्त्रों में मगध को 'अनार्यों का देश' कहा गया है, इसलिए यहाँ ब्राह्मण व्यवस्था का कट्टरपंथ एवं रूढ़िवादिता नहीं थी। यहाँ के लोगों में प्रसार की प्रवृत्ति और उत्साह उन राज्यों की अपेक्षा अधिक थी, जो बहुत दिनों से आर्यों के प्रभाव में थे।

मगध का वातावरण

इसी क्षेत्र में बौद्ध और जैन जैसे सम्प्रदायों का उद्भव हुआ और इन्होंने आडंबर, कर्मकाण्ड पर चोट कर सरलता और समानता पर बल दिया। फलतः विकास के लिए एक अनुकूल स्थिति पैदा हुई है। इस सामाजिक एकजुटता ने मगध को उत्कर्ष प्रदान किया।

4. शासक वर्ग की भूमिका :— मगध को विभिन्न राजवंशों एवं उनके शासकों ने भी मगध को उत्थान में भाग लिया। प्रारंभ में बिम्बिसार व अजातशत्रु जैसे महान सेनानायकों ने मगध साम्राज्य का नेतृत्व किया तो आगे शिशुनाग एवं महापद्मनंद जैसे शासकों ने।

1) बिम्बिसार और मगध का विस्तार :— बिम्बिसार ने विस्तार के लिए तिसूत्री नीति अपनाई—

राजवंशों से वैवाहिक संबंध → बिम्बिसार ने भी तत्कालीन राजवंशों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए। इन वैवाहिक सम्बन्धों से वे राज्य मगध के मित्र बन गए साथ ही उसे नए क्षेत्र एवं धन की भी प्राप्ति हुई। कोशल के राजा प्रसेनजित की बहन महाकोशला से बिम्बिसार ने विवाह किया और काशी का क्षेत्र प्राप्त किया जिसकी आय एक लाख वार्षिक थी। यह मगध की आर्थिक समृद्धि में सहायक हुआ।

इस वैवाहिक संबंध से एक फायदा यह हुआ कि कोशल एवं वत्स के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध थे एवं कोशल से संबंध के कारण अब वत्स की ओर से मगध पर आक्रमण का खतरा जाता रहा।

मद्र की राजकुमारी खेमा के साथ विवाह कर उसने मगध के विस्तार में मद्रों का सहयोग प्राप्त किया। बिम्बिसार ने लिच्छवी राजकुमारी चेलना से विवाह किया इससे यह फायदा हुआ कि उत्तर की ओर से जो आक्रमण होते थे जिससे मगध में अशांति की स्थिति थी उसकी समाप्ति हो गई। इसर बात लिच्छवी की राजधानी वैशाली एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था व नदी-व्यापार पर इसका प्रत्यक्ष नियंत्रण था। फलत: मगध को व्यापारिक सुविधा भी प्राप्त हुई।

कूटनीतिक संबंधों की नीति :-

बिम्बिसार के सिंहासनारोहण के समय मगध की स्थिति अच्छी नहीं थी। उसके आस-पास के शासक अपनी शक्ति के विस्तार में लगे हुए थे। वज्जि-संघ जो मगध के उत्तर में स्थित था का सैन्य विस्तार हो रहा था। कोशल और अवंति विस्तार कर रहे थे। इन स्थितियों में बिम्बिसार ने कूटनीतिक संबंधों की नीति अपनाई और इन राज्यों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए। बिम्बिसार ने अवन्ति, गांधार एवं रोरुक (सिंध) के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किया।

अवंति का शासक चन्द्रप्रद्योत तथा गांधार का शासक पुष्करशीरिन एवं रोरुक का शासक रुद्रायन था। बिम्बिसार ने चण्डप्रद्योत की चिकित्सा के लिए अपने राजवैद्य जीवक को भेजा था।

• युद्ध एवं विजय की नीति :- इस नीति के तहत बिम्बिसार ने अपने शक्तिशाली पड़ोसी राज्य अंग को पराजित किया और उसे मगध में मिला लिया। वस्तुत: यह क्षेत्र लौह अयस्क से युक्त था, फलत: प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में आसानी हुई। अब मगध का विस्तार पूर्व तक हो गया।

इस प्रकार वैवाहिक संबंधों, कूटनीति एवं सैन्य अभियानों के द्वारा बिम्बिसार ने मगध साम्राज्य का विस्तार किया।

इसके अतिरिक्त बिम्बिसार ने मगध में व्यवस्थित शासन की नींव डाली. विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति की, नियमित राजस्व वसूली की व्यवस्था की जो उसकी आर्थिक, सैनिक शक्ति का आधार बना। न्याय व्यवस्था कानून व्यवस्था को उसने सुदृढ़ किया। धार्मिक दृष्टि से भी बिम्बिसार उदार था - बौद्ध एवं जैन दोनों धर्मों के प्रति श्रद्धा का भाव रखा।